मेरे अनुभव

लोगों का कहना है कि 'विश्व तंत्र– ज्योतिष' पत्रिका अपने आप में महत्वपूर्ण है, इस पत्रिका का कोई जवाब नहीं। ज्योतिष क्षेत्र में ऐसी अन्य कोई पत्रिका नहीं जो इस पत्रिका का मुकाबला कर सके। यह पत्रिका अपने आप में सर्वस्व समेटे हुए है, जैसे कि गागर में सागर। यह हम नहीं कह रहे हैं यह कहना है उन लोगों का जो इस पत्रिका को बड़े चाव से पढ़ते हैं, यह कहना है उन लोगों का जिन्होंने इस पत्रिका को पढ़कर अपने जीवन की दिशा ही बदल ली है, जिनको इस पत्रिका के माध्यम से रोशनी की नयी किरण नजर आयी है। ऐसे ही कुछ पाठकों के अनुभव यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं। आप भी इन्हें पढ़िये और यदि आपके पास भी ऐसे ही कुछ अनुभव हों तो हमे 'विश्व तंत्र–ज्योतिष, जोधपुर मुख्यालय' के पते पर लिख भेजिये।

लोगों का कहना है कि 'विश्व तंत्र-ज्योतिष' पत्रिका अपने आप में महत्वपूर्ण है, इस पत्रिका का कोई जवाब नहीं। ज्योतिष क्षेत्र में ऐसी अन्य कोई पत्रिका नहीं जो इस पत्रिका का मुकाबला कर सके। यह पत्रिका अपने आप में सर्वस्व समेटे हुए है, जैसे कि गागर में सागर। यह हम नहीं कह रहे हैं यह कहना है उन लोगों का जो इस पत्रिका को बड़े चाव से पढ़ते हैं, यह कहना है उन लोगों का जिन्होंने इस पत्रिका को पढ़कर अपने जीवन की दिशा ही बदल ली है, जिनको इस पत्रिका के माध्यम से रोशनी की नयी किरण नजर आयी है। ऐसे ही कुछ पाठकों के अनुभव यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं। आप भी इन्हें पढ़िये और यदि आपके पास भी ऐसे ही कुछ अनुभव हों तो हमे 'विश्व तंत्र-ज्योतिष, जोधपुर मुख्यालय' के पते पर लिख भेजिये।

भाग्यवृद्धि लॉकेट ने मुझे हर कार्य में, हर क्षेत्र में सफलता प्रदान की

आदरणीय गुरुजी प्रणाम! गुरुजी आपके कहने पर मैंने आपके कार्यालय से प्राण-प्रतिष्ठित भाग्यवृद्धि लॉकेट मंगवाकर धारण किया। आश्चर्य कि इस लॉकेट के धारण करने के कुछ समय पश्चात् ही मुझे अपने जीवन में परिवर्तन अनुभव होने लगे। मैं 28 वर्षीय ग्रेजुएट युवक हूँ और काफी समय से रोजगार व किसी स्थिर व्यवसाय के लिये प्रयासरत् था परन्तु ना तो मुझे अच्छी नौकरी मिल पा रही थी और ना ही मैं किसी व्यवसाय में सफल हो पा रहा था। मैंने रेडिमेड गारमेन्ट्स शॉप खोली, परन्तु उसमें मुझे बहुत घाटा उठाना पड़ा। एक बार पिताजी से पैसे ले लिये थे इसलिये बार-बार ले नहीं सकता था। नौकरियां भी बहुत की परन्तु कोई भी स्थायी रूप से साथ नहीं दे पायी। मैं बहुत हताश और निराश था। कहीं से उम्मीद की कोई किरण नजर नहीं आ रही थी। फिर एक बार मैंने आपका प्रोग्राम टी.वी. पर देखा और उसमें जब मैंने 'भाग्यवृद्धि लॉकेट' के बारे में सुना तो तुरन्त ही आपके कार्यालय में आर्डर देकर मंगवा लिया। कुछ दिनों में प्राण-प्रतिष्ठित भाग्यवृद्धि लॉकेट मुझे प्राप्त हो चुका था। मेरी माता को तो इस पर पूरा भरोसा था परन्तु पिता हमेशा से ही इसका विरोध करते रहे थे। मैंने जब इस लॉकेट को धारण किया तो इसके इतनी शीघ्र शुभ परिणाम मिलने की आशा नहीं थी। परन्तु लॉकेट धारण करने के एक माह पश्चात् ही मुझे मेरे एक दोस्त ने अपने साथ मिलकर कार्य करने का ऑफर दिया। उसका कपड़े का व्यवसाय है। उसने कहा कि मुझे एक भरोसे का आदमी चाहिये, मुझे काम से बार-बार शहर के बाहर जाना पड़ता है और पीछे कोई सम्भालने वाला नहीं है। अगर तू मेरे साथ मिलकर काम करना चाहे तो आ सकता है। जो भी लाभ होगा उसका तीस प्रतिशत तेरा हिस्सा होगा। मुझे तो जैसे अन्धेरे में रोशनी की किरण दिखाई दी। मैंने तुरन्त हां भर दी। आज उसके साथ काम करते हुए छह माह हो चुके हैं, हमारा व्यवसाय बहुत ही अच्छा चल रहा है। मैं अब इस व्यवसाय में पूर्ण रूप से सेटल हो चुका हूं। यह सब आपके आशीर्वाद और भाग्यवृद्धि लॉकेट का ही कमाल है। मैंने व्यवसाय के लिये दोस्त के साथ मिलकर जो भी कदम उठाया उसमें अपार सफलता मिली, खूब लाभ मिला। आज मैं बहुत खुश हूं, शीघ्र ही मेरा विवाह भी होने जा रहा है। गुरुजी यह सब आपकी मेहरबानी है। मैं सदैव आपका आभारी रहूंगा।

सुबोध सक्सेना, (मुम्बई)

वास्तु दोष निवारण से समस्या मुक्त हुआ

गुरुजी, मैंने अपनी फैक्ट्री के नक्शे तथा उसके बारे में अपनी समस्या पत्र के माध्यम से लिखी थी, जिसका जवाब आपने कुछ ही दिनों में दे दिया था। आपने जो उपाय लिखे वह हमने सारे ही किये। कुछ तोड़ फोड़ कर इधर-उधर शिफ्ट की कार्यवाही भी की। मुझे खुशी है कि इन सब उपायों को करने के बाद से ही मुझे काफी राहत मिली है। फैक्ट्री में काम करने वाली लेबर भी पहले मेरे विरोध में खड़ी रहती थी लेकिन आज वह जी-जान लगाकर कार्य करती है। मेरी परिस्थितियों को समझने का प्रयास कर, नाजायज मांग नहीं करती है। मैं भी उनकी जरुरतें समय पर पूरी करता ही हूं। इससे पहले फैक्ट्री में आये दिन कुछ ना कुछ परेशानी सामने आकर खड़ी हो जाती थी। लेकिन जब से आपने मेरी फैक्ट्री का वास्तु दोष दूर करने का उपाय बताया है और मैंने वे उपाय पूर्ण किये हैं। बहुत फर्क पड़ा है। मेरे हालात भी पहले से बेहतर हुए हैं और फैक्ट्री का प्रोडक्शन भी बढ़ा है। पहले मैं वास्तुशास्त्र पर इतना विश्वास नहीं करता था लेकिन अब मुझे वास्तुशास्त्र के साथ ही आप पर भी पूरा भरोसा है। एक बार पुनः मैं और मेरा पूरा परिवार आपका आभार व्यक्त करते हैं।

महेन्द्र सैनी, (कानपुर)

नीलम जड़ित शनि लॉकेट

पूज्य कमल श्रीमालीजी, नमस्कार! आपकी पत्रिका की ख्याति तथा प्रसिद्धि चारों और फैले। यही भगवान् से मेरी कामना है और आगे भी रहेगी। जबसे मैं इस पत्रिका से जुड़ा हूँ कुछ न कुछ मैंने फायदा ही उठाया है। कुछ

समय-पहले से मेरी दिन-दशा खराब चल रही थी। तभी मुझे एक ज्योतिषी से पता चला कि मुझे साढ़ेसाती चल रही है। इसके लिये उन्होंने शनि शांति के उपाय भी बताये। मैंने वे उपाय भी किये पर कुछ ज्यादा फायदा नहीं हुआ। मेरी समस्या यह थी कि मेरा किसी कार्य में मन नहीं लगता था। मेरी इच्छा ही नहीं होती थी कि मैं ज्यादा कार्य करुँ, ज्यादा पैसे कमाऊं हर वक्त सर चकराता रहता। बार-बार दवाईयों का सहारा लेना पड़ता था। एक दिन यू-ट्यूब पर शनि के बारे में सर्च कर रहा था तो पं. कमल श्रीमालीजी के चैनल पर चला गया। जिसमें आप शनि की साढ़ेसाती के बारे में विस्तार से बता रहे थे। मैंने वहीं से आपके कार्यालय के नम्बर लेकर वहाँ फोन किया तो वहाँ के सदस्य ने मुझे नीलम जड़ित शनि यंत्र लॉकेट धारण करने को बोला। मैंने यह बात अपनी पत्नी को बताई। मेरी पत्नी ने बोला कि क्यों ना आप यह लॉकेट मंगाकर धारण करें। मुझे भी ऐसा लगा कि मुझे यह लॉकेट धारण करना ही चाहिये। मैंने पुनः फोन करके शनि लॉकेट के लिये आर्डर दे दिया। कुछ ही दिनों में लॉकेट सिद्ध होकर पार्सल द्वारा मुझे मिल गया। मैंने बताई गई विधि अनुसार लॉकेट धारण कर लिया और देखते ही देखते कुछ ही माह में मेरे व्यवहार में बहुत बदलाव आ गया। अब मैं हमेशा कार्य में व्यस्त रहता और समय का पता ही नहीं चलता। मेरा काम भी बहुत अच्छा चल निकला। मेरा स्वास्थ्य भी अच्छा हो गया था। मुझे अपने आप में ऐसा अनुभव हो रहा था कि लॉकेट धारण करने से मेरी परेशानियाँ दूर हो रही हैं। आज मैं बिल्कुल आराम से हूँ और मेरी सभी बाधाएँ समाप्त हो चुकी हैं। गुरुजी आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। ईश्वर आपको चहुं दिशाओं में सफलता प्रदान करे। रमेश भाई, अहमदाबाद (गुज.)

वास्तु पिरामिड ने घर का सुख लौटाया

गुरुजी, मैं आपकी पत्रिका का पिछले दो वर्षों से सदस्य हूँ। मैं नियमित रुप से आपकी पत्रिका पढ़ता हूँ, वास्तव में देखा जाये तो आज बाजार में इसके मुकाबले कोई भी ज्योतिष की पत्रिका नहीं है। मैं बहुत ही धार्मिक व्यक्ति हूँ और नियमित रूप से पूजा-पाठ भी करता हूँ। परन्तु इतना सबकुछ करने के पश्चात् भी मेरे घर में पता नहीं क्यों, शान्ति नहीं थी। घर का माहौल प्रायः अशान्त ही रहता था ओर तो ओर घर में निरन्तर कोई ना कोई बीमारी से ग्रस्त रहता था। कभी मेरी पत्नी तो कभी मेरे बच्चे, कभी मेरी माता तो कभी मेरे पिता, मेरा भी स्वास्थ्य गिरता जा रहा था। आपकी पत्रिका में वास्तुदोष से संबंधित बहुत से लेख पढ़े थे, सो मन में आया कि कहीं मेरा घर वास्तुदोष का शिकार तो नहीं है। यही सोचकर मैंने आपसे परामर्श किया और आपके द्वारा बताये गये उपायों को अपनाया। मैंने घर में वास्तुदोष पिरामिड स्थापित किया और देखते ही देखते मेरा घर मानो खुशियों से भर गया। आज इतना समय हो गया है ईश्वर की कृपा है हमारे घर में सभी लोग स्वस्थ एवं सुखी हैं। वास्तु पिरामिड स्थापित करने के बाद धीरे-धीरे स्थितियाँ ठीक होने लगी। घर में बीमारी कम होने लगी। घर का क्लेश दूर होने लगा। घर में शांति रहने लगी। कामकाज में मन लगने लगा। मुझे यह कहते हुए किसी प्रकार का शक नहीं है कि वास्तु पिरामिड स्थापित करने से मेरे घर के लड़ाई-झगड़ों पर अंकुश ही नहीं लगे साथ-साथ घर के सदस्यों को आये दिन होने वाली बीमारियों से भी मुक्ति मिली। वास्तु पिरामिड स्थापित करने से मैं और मेरे परिवार वाले सुखी और निरोगी जीवन जी रहे हैं। सब आपकी कृपा है। प्रतिक मिश्रा, गाजियाबाद (उ.प्र.)

दाम्पत्य सुख शांति पैकेट के प्रयोग से मेरे दाम्पत्य जीवन में खुशियाँ आई

गुरुजी, प्रणाम! मैं रेणु वालिया, दिल्ली में रहती हूँ। मेरे एक लड़की है। घर में सास-ससुर और एक ननद भी रहते है। शादी के साल भर बाद से मेरे सास-ससुर का व्यवहार बदल गया था। मेरे पति मुझसे ढंग से बात नहीं करते है। वे शराब का नशा भी करने लग गये थे। मेरे मना करने पर वे मुझसे झगड़ा करने लग जाते थे। मेरे पति अपने माँ-पिताजी का ही कहना मानते थे। जिससे मैं घर में अकेली-अकेली महसूस करती थी। मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। सभी की मुझे परवाह नहीं थी लेकिन मेरे पति का व्यवहार बदलने से मेरा मन उस घर में लगता ही नहीं था। उन दिनों मैं अपने पीहर रहने आ गई थी। जब मैं अपनी सहेली से मिली तो उससे मैंने अपनी बाते शेयर की तो उसने ही मुझे पं. कमल श्रीमालीजी के बारे में बताया और कहा कि एक बार उनके कार्यालय में जरुर बात कर। उसके दूसरे दिन ही मैंने श्रीमालीजी के कार्यालय में फोन कर अपनी समस्या बताई तो उन्होंने मुझे दाम्पत्य सुख शांति पैकेट का पूजन करने को बोला। मैंने अपने पीहर के पते पर ही यह पैकेट मंगवा लिया और उसमें दी गई विधि के अनुसार पैकेट का प्रयोग किया। पैकेट के पूर्ण पूजन करने के लगभग 20 दिन बाद मेरे पति का फोन आ गया कि मैं तुम्हे लेने आ रहा हूँ, मेरा घर में मन नहीं लगता है। मुझे यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि यह सब इतनी जल्दी कैसे हो गया। मैंने यह बात अपने मम्मी-पापा को बताई तो वे बहुत ही खुश हुए और कहा कि यह सब दाम्पत्य सुख पैकेट से ही संभव हो पाया है। मैं अपने पति के साथ अपने ससुराल आ गई। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि पति के साथ-साथ सभी का व्यवहार मेरे प्रति अच्छा हो गया था। मैंने यह बात अपनी सहेली को बताई तो उसने गुरुजी का धन्यवाद करने को बोला। मैंने धन्यवाद करने के लिये आपके कार्यालय में फोन लगाया तो गुरुजी के शिष्यों ने पत्र लिखने को बोला। मैं इस पत्र के माध्यम से गुरुजी का तहेदिल से धन्यवाद करती हूँ। रेणु वालिया, (दिल्ली)

धनकुबेर पैकेट की स्थापना से मेरे घर का दुःख-दर्द दूर हुआ

गुरुजी, मेरी दुकान बहुत अच्छी चलती थी लेकिन अचानक पता नहीं क्या हुआ कि मेरी दुकान में ग्राहकी बहुत ही कम हो गई। ग्राहक आने ही बंद हो गये। इसके लिये मैं एक तांत्रिक के पास भी गया उन्होंने कहा इस पर तांत्रिक प्रयोग कर दिया गया है। दुकान को बांध दिया गया है। इसको उतारने के लिए इतना खर्चा आयेगा। खर्चा बहुत ज्यादा होने के कारण मैं हामी नहीं भर सका। मैं दूसरा रास्ता देखने की सोचने लगा। एक दिन मैंने अपने परिचित पंडितजी से इसके बारे में बात की तो उन्होंने हमारे लिए शांति यज्ञ भी किया। उससे कुछ फर्क तो पड़ा लेकिन वह भी नहीं के बराबर ही था। मेरी चिंता को देखकर मेरी पत्नी मुझे सांत्वना देती कि आप चिंता ना करें धीरे-धीरे सब ठीक हो जायेगा। एक दिन मैं अपनी दुकान बंद कर रहा था कि एक कस्टमर मेरी दुकान पर कुछ सामान खरीदने आया उसके हाथ में विश्व तंत्र ज्योतिष नाम की एक पत्रिका थी। सामन खरीदने के बाद निकल गया और पत्रिका मेरी दुकान में छोड़ दी। मुझे वह देखने में बहुत आकर्षक लगी। मैं वह पत्रिका घर लेकर आ गया। घर पर आकर वह पुस्तिका पढ़ी। उस पत्रिका में धनकुबेर पैकेट के बारे में दे रखा था। मुझे यह पैकेट मंगवाने की इच्छा हुई। दूसरे दिन मैं पत्रिका पुनः अपनी दुकान ले गया। जब वह व्यक्ति अपनी किताब वापस लेने आये तो मैंने उनसे इस पत्रिका के बारे में पूछा तो उस व्यक्ति ने इस पत्रिका और आप श्रीमालीजी की खूब तारीफ की। उसके बाद मैंने पत्रिका में दिये नम्बर पर फोन कर धनकुबेर पैकेट को मंगवाया और पैकेट के साथ दी हुई विधि से पैकेट के प्रयोग को किया। पैकेट प्रयोग के दो महीने तक तो कुछ फायदा नहीं हुआ। इसके लिये मैंने श्रीमालीजी के कार्यालय में फोन कर पूछा तो बोले 21 से 90 दिनों तक असर होता है। जब दो महीने गुजरे ही थे धीरे-धीरे मेरी दुकान में ग्राहकों की संख्या बढ़ने लगी। घर में भी शांति हो गई थी। मेरी दुकान वापस चल निकली थी। मैं विश्व तंत्र ज्योतिष पत्रिका का सदस्य भी बन गया हूँ। जिससे मुझे हर महीने घर पर पत्रिका मिल जाती है। श्रीमालीजी मैं किन शब्दों में आपका शुक्रिया अदा करूं मेरे पास ऐसे शब्द नहीं है। इसके लिए आपको बारम्बार धन्यवाद।

पाठकों यदि आपके भी साधना प्रयोगों से, पत्रिका में दिये गये परामर्श से, योग से, छोटे-छोटे टिप्स से यदि कोई लाभ हुआ है तो अपने अन्य पाठक भाई बहनो को बाँटने में संकोच महसूस ना करें। आपके अनुभव से कोई और पाठक भी प्रेरित होकर अपनी सफलता का मार्ग ढूंढ सकता है, अपनी निराशा के पार जा सकता है। धन्यवाद।